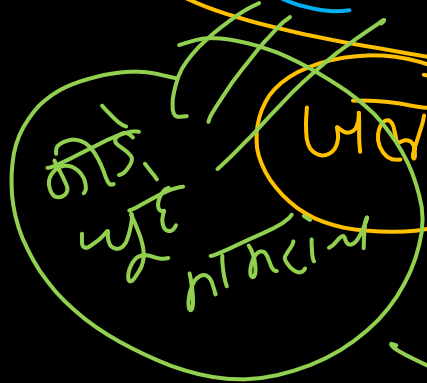


पर्यावरण के मुद्दे

ठोस अपशिष्ट (Solid Wastes) — घरों, कार्यालयों, विद्यालयों व भंडारों आदि से निष्कासित होने वाली अनावश्यक चीजे, जिन्हें नगरपालिका एकत्रित करके उनका निस्तारण करती है, उन्हें नगर पालिका के ठोस अपशिष्ट कहते हैं।

गेस अपशिष्ट

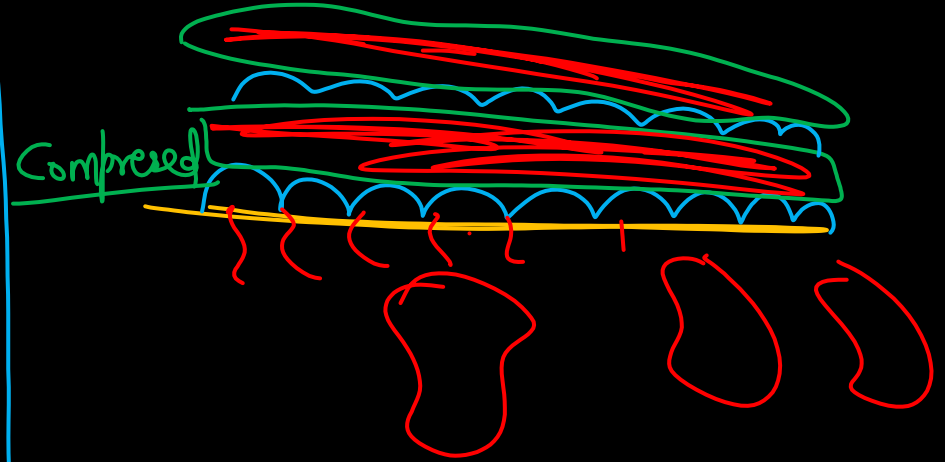


जलवा

खाद्य

संग संग्रहण

सेनेटरी लैंडफिल्स



पर्यावरण के मुद्दे

ठोस अपशिष्ट (Solid Wastes) — घरों, कार्यालयों, विद्यालयों व भंडारों आदि से निष्कासित होने वाली अनावश्यक चीजे, जिन्हें नगरपालिका एकत्रित करके उनका निस्तारण करती है, उन्हें नगर पालिका के ठोस अपशिष्ट कहते हैं ।

पर्यावरण के मुद्दे

इन्हें जलाकर इनका आयतन कम किया जा सकता है लेकिन इन्हें पूर्णतः खत्म नहीं किया जा सकता। नमरों या शहरों के आस-पास ऐसे क्षेत्र देखे जा सकते हैं

पर्यावरण के मुद्दे

जहां ठोस अपशिष्टों को निस्तारण के लिए डाला जाता है।
सैनिटरी लैंडफिल्स ऐसे ही क्षेत्र है जहां गड्ढे में ठोस
अपशिष्टों को दबाकर मिट्टी से ढक दिया जाता है। लेकिन
महानगरों का ठोस कचरा इतना अधिक होता है कि
सैनिटरी लैंडफिल्स से भी इनका निस्तारण नहीं किया जा
सकता।

पर्यावरण के मुद्दे

ठोस अपशिष्टों को मुख्यतः तीन समूहों में बाँटा जा सकता

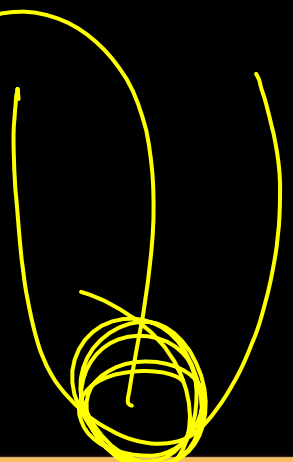
है-

1. जैव अपघटनीय या जैव निम्नीकरण योग्य - इसके अन्तर्गत सड़ीगली सब्जियाँ व फल तथा अन्य वनस्पतियाँ आती है। इन्हें जमीन में गहरा गड्ढा खोदकर दबा दिया जाता है जिससे कि ये प्राकृतिक रूप से अपघटित हो जाते हैं।

① जैव अपघटनीय अपशिष्ट - सब्जी, फलो - -

② ~~जैव~~ अनअपघटनीय " :- पॉलीथीन Non-recycle

③ पुनः चक्रण :- प्लास्टिक का उत्पन्न

④ रेडियोधर्मी ठोस अपशिष्ट : E waste → 

पर्यावरण के मुद्दे

2. जैव अनअपघटनीय या जैव निम्नीकरण अयोग्य - इसके अन्तर्गत प्लास्टिक पेक, पॉलीथीन, पॉलीस्टेरीन आदि आते हैं। ये वातावरण में लम्बे समय तक बने रहते हैं। इनका जैविक अपघटन नहीं हो पाता है।

पर्यावरण के मुद्दे

3. पुनश्चक्रण योग्य (Recyclable) - इसके अन्तर्गत वे ठोस अपशिष्ट आते हैं जिनका पुनश्चक्रण करके उन्हें फिर से काम में लिया जा सकता है इन्हें कचरे से अलग करने में कचरा बीनने वालों की महत्वपूर्ण भूमिका होती

पर्यावरण के मुद्दे

ठोस अपशिष्ट के स्रोत -

1. घरेलू कचरा- काँच, टूटे हुए कप-प्लेट (चीनी मिट्टी के बने हुए), प्लास्टिक, धातु व पॉलीथीन आदि ।
2. अस्पताल के अपशिष्ट - इसके अन्तर्गत मुख्यरूप से डिस्पोजेबल सूईयां, काम में आयी हुई पट्टियाँ, औषधियों की पैकिंग या रैपर, मरीजों के गंदे वस्त्र, शल्य क्रिया से अलग किए हुए मानव अंग या कोई भी भाग आदि आते हैं। इनमें अनेक रोगों के रोगजनक उपस्थित होते हैं ।

पर्यावरण के मुद्दे

3. इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट - कम्प्यूटर व उससे संबंधित सामान तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान जिन्हें ठीक करके काम में नहीं लिया जा सकता है, इन्हें ही ई. अपशिष्ट या इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट कहते हैं। विकसित देश अपने ई अपशिष्ट विकासशील देशों में भेज देते हैं। इन विकासशील देशों में भारत पाकिस्तान, चीन व बंगलादेश आदि प्रमुख है।

पर्यावरण के मुद्दे

4. औद्योगिक ठोस अपशिष्ट कुछ उद्योगों के कचरे को बिना उचित निस्तारण के इधर-उधर फेंक दिया जाता।
5. कृषि अपशिष्ट - कृषि जन्य कचरा जैसे सड़ीगली वनस्पतियाँ, कीटनाशक व कीटनाशक रसायनों के काम में आये हुए खाली डब्बे आदि कृषि अपशिष्टों में आते हैं।

पर्यावरण के मुद्दे

6. प्लास्टिक एवं पॉलीथीन - प्लास्टिक के बने विभिन्न सामान व पॉलीथीन थैलियां काम में लेने के बाद इधर-उधर फेंक दी जाती हैं जो लम्बे समय तक अपघटित नहीं होती हैं।

पर्यावरण के मुद्दे

प्रभाव

1. सैनिटरी लैंडफिल्स से भूमिगत जल प्रदूषित होता है । इनसे विभिन्न प्रकार के हानिकारक रसायनों का रिसाव होने का खतरा भी बना रहता है ।
2. अस्पतालों के अपशिष्टों में अनेक रोगजनक सूक्ष्मजीव होते हैं जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों को उत्पन्न करते हैं।
3. पॉलीथीन से नालियां बंद हो जाती है।

पर्यावरण के मुद्दे

ठोस अपशिष्ट उपचार-

1. जैव निम्नीकरण योग्य ठोस अपशिष्ट को गहरा गड्ढा खोदकर दबा देना चाहिए।
2. अस्पताल अपशिष्टों का सावधानीपूर्वक व उचित निस्तारण होना चाहिए। इस कार्य हेतु भस्मक (Incinerator) का प्रयोग किया जाना अत्यावश्यक है।

पर्यावरण के मुद्दे

3. ई. अपशिष्ट के निस्तारण की उन्नत तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए ।
4. कृषि अपशिष्ट (फसलों के अवशेषों) का उपयोग ऊर्जा उत्पादन में करना चाहिए ।
5. पॉलीथीन थैलियों पर लगी रोक का क्रियान्वयन कठोरता से होना चाहिए। पॉलीथीन व प्लास्टिक अपशिष्ट का उपयोग सड़क बनाने में किया जा सकता है ।

पर्यावरण के मुद्दे

कृषि - रसायन और उनके प्रभाव-

हरित क्रांति के चलते फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए अजैव (अकार्बनिक) उर्वरक (इनऑर्गेनिक फर्टिलाइजर) और पीड़कनाशी का प्रयोग कई गुना बढ़ गया है और अब पीड़कनाशी, शाकनाशी, कवकनाशी (फंगीसाइड) आदि का प्रयोग काफी होने लगा है।

खरित सुपोषण

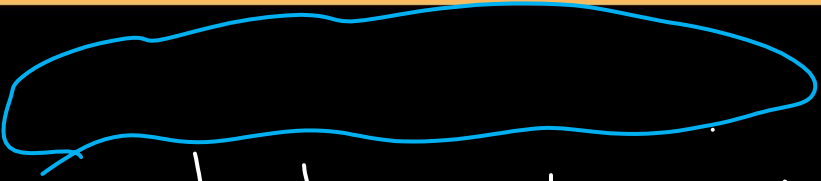
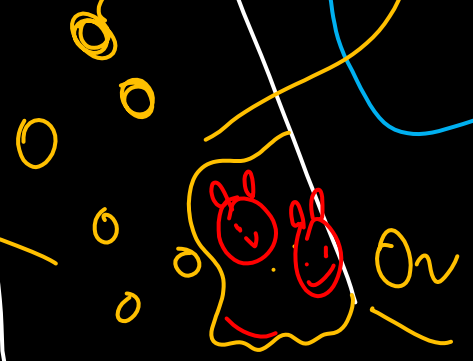
भूमि

जल



पादप
लिक्क

अशुद्ध



कीटनाशक
शाकनाशी
पीड़ानाशक



पर्यावरण के मुद्दे

ये सभी अलक्ष्य जीवों (नॉन-टारगेट आर्गेनिज्म), जो मृदा पारितंत्र के महत्वपूर्ण घटक हैं, के लिए विषैले हैं।

कृत्रिम उर्वरकों की मात्रा को बढ़ाते जाने से जलीय पारितंत्र बनाम सुपोषण (यूट्रॉफिकेशन) पर क्या असर होगा। इसलिए कृषि वर्तमान समस्याएँ अत्यंत गंभीर हैं।

पर्यावरण के मुद्दे

जैव खेती - केस अध्ययन -

एकीकृत जैव खेती चक्रीय एवं शून्य अपशिष्ट (जीरो वेस्ट) वाली है। इसमें एक प्रक्रम से प्राप्त अपशिष्ट अन्य प्रक्रमों के लिए पोषक के रूप में काम में आता है। इसके कारण संसाधन का अधिकतम उपयोग संभव है और उत्पादन की क्षमता भी बढ़ती है।

पर्यावरण के मुद्दे

रमेश चंद्र डागर नामक सोनीपत, हरियाणा का किसान भी यही कर रहा है। वह मधुमक्षिका पालन, डेयरी प्रबंधन, जल संग्रहण (वाटर हार्वेस्टिंग), कंपोस्ट बनाने और कृषि का कार्य श्रृंखलाबद्ध प्रक्रमों में करता है जो एक दूसरे को संभालते हैं और इस प्रकार यह एक बहुत ही किफायती और दीर्घ - उपयोगी प्रक्रम बन जाता है।

पर्यावरण के मुद्दे

उस फसल के लिए रासायनिक उर्वरक के प्रयोग की कोई आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि पशुधन के उत्सर्ग (मल-मूत्र) यानी गोबर का प्रयोग खाद के रूप में किया जाता है।

पर्यावरण के मुद्दे

फसल अपशिष्ट का प्रयोग कंपोस्ट बनाने के लिए किया जाता है जिसका प्रयोग प्राकृतिक उर्वरक के रूप में या फार्म की ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राकृतिक गैस के उत्पादन में किया जा सकता है।

पर्यावरण के मुद्दे

इस सूचना के प्रसार और एकीकृत जैव खेती के प्रयोग में सहायता प्रदान करने के लिए डागर ने हरियाणा किसान कल्याण क्लब बनाया है जिसकी वर्तमान सदस्य संख्या 5000 कृषक है।

पर्यावरण के मुद्दे

रेडियो सक्रिय अपशिष्ट-

आरंभ में न्यूक्लीय ऊर्जा को विद्युत उत्पादन के मामले में गैर-प्रदूषक तरीका माना जाता था। बाद में यह पता चला कि न्यूक्लीय ऊर्जा के प्रयोग में दो सर्वाधिक खतरना अंतर्निहित समस्याएँ हैं।



पर्यावरण के मुद्दे

पहली समस्या आकस्मिक रिसाव की है जैसा कि थ्री माइल आयलैंड और चेरनोबिल की घटनाओं में हुआ था। इसकी दूसरी समस्या रेडियोसक्रिय अपशिष्ट के सुरक्षित निपटान की है।

पर्यावरण के मुद्दे

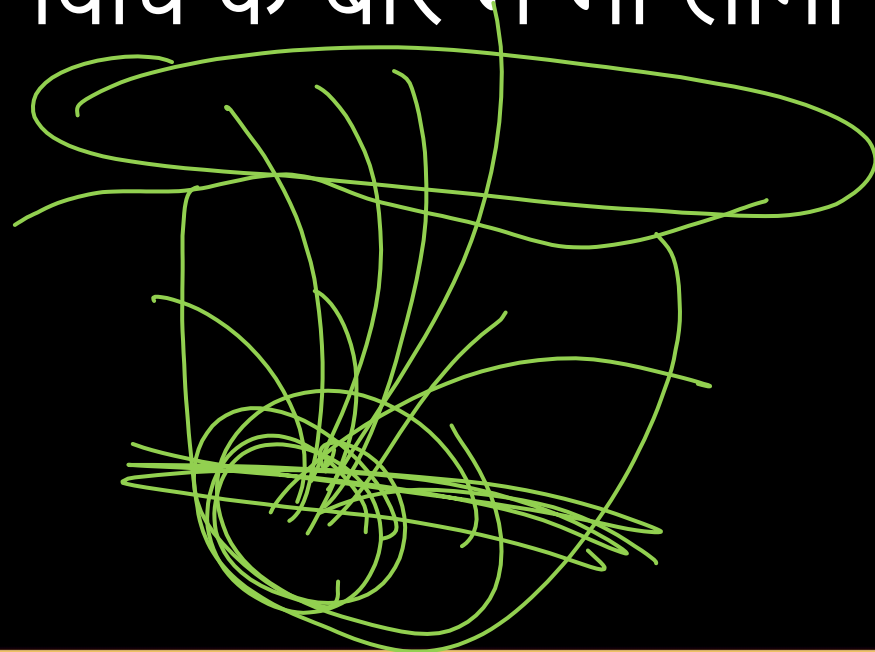
न्यूक्लीय अपशिष्ट से निकलने वाला विकिरण जीवों के लिए बेहद नुकसानदेह होता है क्योंकि इसके कारण अति उच्च दर से उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) होते हैं। न्यूक्लीय अपशिष्ट विकिरण की ज्यादा मात्रा (डोज) घातक यानी जानलेवा (लीथल) होती है

पर्यावरण के मुद्दे

लेकिन कम मात्रा के कारण कई विकार होते हैं। इसका सबसे अधिक बार-बार होने वाला विकार कैंसर है। इसलिए न्यूक्लीय अपशिष्ट अत्यंत प्रभावकारी प्रदूषक है और इसके उपचार में अत्यधिक सावधानी की जरूरत है।

पर्यावरण के मुद्दे

यह सिफारिश की गई है कि परवर्ती भंडारण का कार्य उचित रूप में क्वचित पात्रों में चट्टानों के नीचे लगभग 500 मीटर की गहराई में पृथ्वी में गाड़कर करना चाहिए। यद्यपि, निपटान की इस विधि के बारे में भी लोगों का कड़ा विरोध है।





5 वजे

विदुषां ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।

धन्यवाद